हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला में गणतंत्र दिवस का आयोजन

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान द्वारा गणतंत्र दिवस का आयोजन किया गया, जिसका शुभारम्भ संस्थान के निदेशक, **डॉ. वी. पी . तिवारी** ने ध्वजारोहण किया I तदुपरांत वहां उपस्थित, संस्थान के समस्त अधिकारियों , कर्मचारियों एवं उनके परिवार के सदस्यों ने राष्ट्रगान किया I

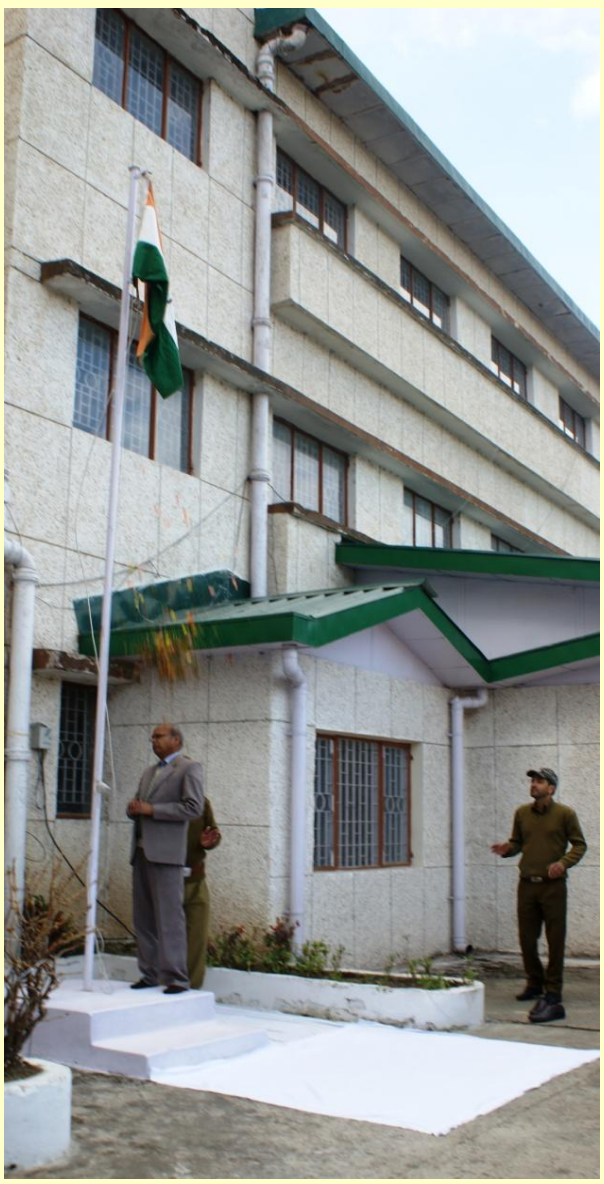

इस अवसर पर **डॉ. तिवारी** नें उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि बड़े हर्ष का विषय है कि आज हम 67वां गणतंत्र दिवस मनाने के लिए एकत्र हुए हैं I निदेशक महोदय ने उपस्थित जन-समूह को गणतंत्र दिवस की बधाई देते हुए कहा कि 26 जनवरी 1950 को भारत का नया संविधान लागू हुआ तब से भारत में 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस को एक राष्ट्रीय त्यौहार के रूप में मनाया जा रहा है । उन्होंने बताया कि 26 जनवरी का दिन इसलिए चुना गया था क्योंकि 1930 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने इसी दिन को पूर्ण स्वराज दिवस घोषित किया था । निदेशक महोदय ने आगे कहा कि पहले भारतीय सविंधान में केवल अधिकारों का ही वर्णन किया गया था परन्तु बाद में 42वें संशोधन में अधिकारों के साथ-साथ कुछ कर्तव्यों को भी जोड़ा गया I हमें अपने अधिकारों के प्रति सजग तो होना ही चाहिए परन्तु इसके साथ-साथ अपने कर्तव्यों का भी भली-भांति निर्वहन करना चाहिए I भारत सरकार के कर्मचारी होने के नाते हम सभी का कर्तव्य है कि हम अपने-अपने कार्यों को तन्मयता एवं कृतज्ञता के साथ समय पर पूरा करें I

उन्होंने भारत सरकार के वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के माननीय मंत्री श्री प्रकाश जावड़ेकर की मणिपुर यात्रा का हवाला देते हुए बताया कि भारतीय वन्यजीव संस्थान के वैज्ञानिकों को नागालैंड के दूर-दराज क्षेत्र में कठिन परिस्थितियों में जनजातीय लोगों के साथ मिलकर *आमूर फल्कान* (*Amoor falcon*) के सरंक्षण पर कार्य करते हुए देख कर मंत्री महोदय को बड़ी प्रसन्नता हुई तथा उन्होंने उनका उत्साहवर्धन भी किया I

वर्तमान परिपेक्ष्य पर बात करते हुए उन्होंने कहा कि बड़े गर्व का विषय है कि हमें हिमालयी क्षेत्र में कार्य करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है I विश्व का एक अनूठा हिस्सा होने के नाते यहाँ वानिकी एवं पर्यावरण के क्षेत्र में कार्य करने की अपार संभावनाएं है, विशेषकर तब, जब जलवायु परिवर्तन को पूरे विश्व में एक ज्वलंत समस्या के रूप में देखा जा रहा है और हिमालय के पारिस्थितिकी पर इसके दूरगामी परिणाम की आशंका है I आवश्यकता केवल इस बात की है कि हम संगठित होकर कार्य करें जिससे हमारे संस्थान का नाम हो, परिषद का नाम हो और देश की उन्नति में हम भी कहीं-न-कहीं अपनी भागेदारी सुनिश्चित कर सकें I

FOR
DIRECTOR'S
VEHICLE